DR. BHIM RAO AMBEDKAR COLLEGE
(University of Delhi)

Main Wazirabad Road, Yamuna Vihar, Delhi-110094, Phones: 22814126, Telefax: 22814747

Email: info@drbrambedkarcollege.ac.in; brambedkarcollege.du@gmail.com;
principal@drbrambedkarcollege.ac.in; Website: www.drbrambedkarcollege.ac.in

Ref.No. BRAC/OP/Conf./ 2018-19/ Dated: 03.06.2018

प्रेस विज्ञप्ति

पर्यावरण की चुनौतियां और "न्यू इंडिया" पर डॉ. भीमराव अंबेडकर कॉलेज की दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न

दिल्ली विश्वविद्यालय के डॉ. भीमराव अंबेडकर कॉलेज की ' पर्यावरण की चुनौतियां और "न्यू इंडिया" ' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न हो गयी. . नीरी (सीएसआइआर), नेशनल इन्वॉर्न्मेंट साइंस एकेडमी, दिल्ली (एनइएसए) और इन्वॉर्न्मेंटल एंड सोशल डेवलपमेंट एसोसिएशन, दिल्ली (इएसडीए) के सहयोग से आयोजित इस संगोष्ठी में देश के कुल 18 राज्यों के शोध संस्थान, विश्वविद्यालय एवं संगठन के अतिथि वक्ताओं ने सिरकत की जिनमें एम्स(दिल्ली), डीआरडीओ(दिल्ली एवं मुंबई), टेरी, सीएसआइआर, आईआईटी(दिल्ली), पटेल चेस्ट इन्स्टीट्यूट(दिल्ली), बीएचयू एवं एएमयू जैसी संस्थाएं प्रमुख हैं. इन दो दिनों कुल 4 विशेष तकनीक आधारित सत्र एवं 3 खुला सत्र आयोजित किए गए. इसके साथ ही जिन 60 शोधार्थियों ने अपने शोध-पत्र प्रस्तुत किए एवं पोस्टर के माध्यम से अपने शोध को सामने रखा, क्रमशः दोनों केटेगरी में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया.

इस दौरान संगोष्ठी के संयोजक डॉ. एस.एस. चावला ने पिछले दो दिनों तक चलनेवाली गतिविधियों की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए सारे शोध-पत्र का संक्षिप्त सार प्रस्तुत किया. इसके साथ ही श्रोताओं की तरफ से पर्यावरण संरक्षण एवं "न्यू इंडिया" को लेकर जो सुझाव आए, उन्हें रिपोर्ट में प्रमुखता से शामिल किया.

दो दिनों तक पर्यावरण , प्रदूषण, तकनीक, बाजार की ताकतें और अर्थशास्त्र से जुड़े विषयों पर हुई इस विस्तृत चर्चा से यह बात स्पष्ट तौर पर सामने निकलकर आयी कि जिस तेजी से पर्यावरण एवं प्राकृतिक संसाधनों का क्षरण हो रहा है, इसे समय रहते संरक्षित नहीं किया तो आनेवाला समय में बेहतर भविष्य क्या, इंसान के होने की संभावना भी खत्म हो सकती है. इसके लिए जरूरी है कि विज्ञान के साथ-साथ हमारे जो पारंपरिक तरीके रहे हैं, प्रकृति और मनुष्य के साथ जो आदिम संबंध रहा है, उन पर पुनर्विचार किया जाए. ये बात समापन सत्र के मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि ने विस्तार से की.

मुख्य अतिथि के तौर पर मौजूद पूर्व आइएएस अधिकारी एवं ग्रीन द अर्थ के चेयरमैन बलविन्दर कुमार ने कहा कि हम जिस विकास की ओर बढ़ रहे हैं, प्रकृति से हमारे संबंध तेजी से कमजोर होते जा रहे हैं. इसके लिए सबसे ज्यादा जरूरी चीज है कि इस संकट के प्रति लोगों को जागरूक किया जाए. व्यक्तिगत स्तर पर छोटे-छोटे प्रयास करें जो प्रकृति और पर्यावरण के पक्ष में जाते हों.

दिल्ली स्कूल ऑफ इकॉनमिक्स के प्रोफेसर एवं पर्यावरणविद् प्रो. सुरेन्द्र सिंह ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण के लिए सबसे जरूरी कदम होगा कि सरकार इससे जुड़ी सारी सूचनाएं लोगों के बीच उपलब्ध कराए. ये सूचनाएं आगे चलकर सरकार और पर्यावरण के हित में ही काम करेंगे. इससे लोग जागरूक तो होंगे ही इसके साथ ही नए-नए प्रयोग को लेकर उनके बीच उत्साह का माहौल बनेगा. कई ऐसे प्रभाव हैं जो सीधे तौर पर दिखाई नहीं देते लेकिन वो बहुत दूर जाकर असर करते हैं. मसलन हजारों छात्रों पर हुए गहन अध्ययन से यह नतीजा हमारे सामने आया है कि 1 डिग्री तापमान के बढ़ने से सीधे उनकी बौद्धिक क्षमता और स्मरण शक्ति पर असर पड़ता है. ऐसे में हमें चाहिए कि प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों स्तर के प्रभावों को समझने का प्रयास करें.

प्रो. सुरेन्द्र सिंह की बात को आगे बढ़ाते हुए कॉलेज प्रिंसिपल एवं समष्टि आधारित विकास विषय के ज्ञाता डॉ. जी. के. अरोड़ा ने कहा कि कहीं न कहीं आर्थिक स्तर की गड़बड़ियां पर्यावरण की समस्याओं के लिए जिम्मेदार हैं. हम जिन्हें प्रदूषण कह रहे हैं वो दरअसल इन्हीं आर्थिक गड़बड़ियों के बीच से निकलकर आए हैं.

इएसडीए की एक्जिक्यूटिव डायरेक्टर गीतांजलि कौशिक ने संगोष्ठी के दौरान प्रस्तुत किए गए शोध- पत्र की चयन प्रक्रिया पर बात करते हुए कहा कि हमारी कोशिश रही है कि हम पर्यावरण से जुड़ी समस्याओं पर आधारित शोध-पत्र के साथ-साथ उन रिसर्च को भी आगे लाया जाए जिनमें समाधान के तरीके भी मौजूद हैं.

कॉलेज चेयरमैन एवं संगोष्ठी के पैट्रन दीपांकर श्रीवास्तव ने कहा कि इस संगोष्ठी के दौरान जो भी सुझाव सामने आए हैं, कॉलेज उसे व्यावहारिक रूप देने की कोशिश करेगा और इन्हें छात्रों के बीच अभियान की शक्ल देने का काम करेगा.

कार्यक्रम के अंत में आयोजन समिति के सचिव डॉ. जितेन्द्र नागर ने देशभर से आए अतिथि वक्ताओं, पर्यावरणविद्, कॉलेज शिक्षकों, अधिकारी, कर्मचारियों एवं छात्रों का धन्यवाद करते हुए इस संगोष्ठी के पीछे की तैयारी की विस्तार से चर्चा की. उन्होंने बताया कि तैयारी एवं क्रियान्वयन के स्तर पर ऐसी संगोष्ठी बहुस्तरीय होती है और यह बिना सामूहिक इच्छाशक्ति के संभव नहीं है.

मीडिया प्रभारी